महात्मा गाँधी की सेवा भावना

भारत वासियों का हृदय सर्वदा परोपकार व सेवा भावना से ओतप्रोत होता है। स्वयं को दूसरे के लिए त्याग समर्पण करने की भावना उनमें विद्यमान होती है। चाणक्य नीति में परोपकार की महिमा का वर्णन करते हुए लिखा है कि जिन सज्जनों के हृदय में परोपकार का भाव सदा जागरूक रहता है उनकी सभी विपदाएँ नष्ट हो जाती है और उन्हें पग-पग पर संपत्ति प्राप्त होती है।

परोपकारी व्यक्ति को आत्म सुख प्राप्त होता है साथ ही विश्व का समुचित कल्याण भी होता है। निस्वार्थ भाव से तन-मन-धन से दूसरों की सेवा करना ही परोपकार है। इसलिए परोपकार को सबसे बड़ा पुण्य और सच्ची मानवता का प्रतीक कहा गया है। (श्री बलभद्र प्रसाद गुप्त - रसिक तथागत पृ.२०)

इंसान महान पैदा नही होता है, उसके कर्म व विचार महान बनाते है। विचार और काम की शुद्धता और सरलता ही महान लोगों को आम लोगों से अलग करती है। वे वही काम करते है, जो दूसरे करते है, लेकिन उनका मकसद समाज में बदलाव लाना होता है। भारत में भी एक ऐसे महापुरुष का जन्म हुआ जिसने अपने कर्म व व्यवहार से बहुत बड़ा बदलाव लाया। वह महान महापुरुष महात्मा गाँधी थे जिन्हें हम प्यार से बापू भी कहते है। वे एक उच्च विचार महान सोच वाले साधारण व्यक्ति थे लेकिन अपने विचारों व कर्मो से करोड़ों देशवासियों के जीवन में बदलाव लाना चाहते थे और लाने में सफल भी हुए।

महात्मा गाँधी के विचारों ने दुनिया भर के लोगों को न सिर्फ प्रेरित किया बल्कि करूणा, सहिष्णूता और शांति के दृष्टिकोण से भारत और दुनिया को बदलने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। साथ ही दुनिया भर में हाशिये के समूहों और उत्पीड़ित समुदायों की आवाज उठाने में भी अतुलनीय योगदान किया।

उन्होंने देश-विदेश में संकट के समय विशेषकर जब महामारी फैली हुई थी तब महामारी से ग्रस्त रोगियों की जो सेवा निस्वार्थ व समर्पित भाव से की वह बहुत ही सराहनीय है। उन्होंने अपने जीवन में भारत और दक्षिण अफ्रीका में महामारी के समय महामारी से ग्रस्त रोगियों की युद्ध में घायल लोगों की जिस लगन व त्याग से, बिना किसी भेद भाव के सेवा की वह उन्हें महान बनाता है। मैं यहाँ उनके जीवन की कुछ घटनाओं का वर्णन प्रस्तुत कर रहा हूँ।

महात्मा गाँधी दक्षिण अफ्रीका मे रहते थे वहाँ वे वकील थे और उनकी वकालत अच्छी चल रही थी पर गाँधीजी को उससे संतोष नही हुआ उनके मन में कुछ उधेड़-बुन चल रही थी वे सोच रहे थे कि जीवन अधिक सादा होना चाहिए, कुछ शारीरिक रोगियों की सेवा कार्य होना चाहिए। इसी दौरान एक दिन की घटना है कि एक कोढ़ से पीड़ित एक अपंग मनुष्य महात्मा गाँधी के घर आया। उसकी दशा देखकर गाँधीजी का मन विचलित हुआ उसे खाना खिलाकर वापस भेजने का मन गाँधीजी का नही हुआ फलस्वरूप महात्मा गाँधी ने अपने घर के एक कमरे में उस को कोढ़ ग्रस्त मनुष्य को ठहराया उसके घाव साफ किए और उसकी सेवा में लग गये।

कोढ़ से पीड़ित युवक की व्यवस्था करना गाँधीजी के लिए ज्यादा दिन संभव नही था क्योंकि उसे हमेशा के लिए घर में रखकर सेवा करने की सुविधा गाँधीजी के पास नही थी। अतः गाँधीजी ने मजबूरीवश उसे गिरमिटियों के लिए चलने वाले सरकारी अस्पताल में भेज दिया। उस कोढ़ ग्रस्त मनुष्य को अस्पताल भेजने के बाद उनका मन व्याकुल हो उठा, उन्हें इससे संतोष नही हुआ उनके मन में विचार आया कि कुष्ठ रोगी की सेवा का ऐसा काम मैं हमेशा कर सकूँ तो कितना अच्छा होता।

गाँधीजी के परिचित डॉक्टर बूथ सेंट एडम्स मिशन के मुखिया थे वे हमेशा उनके पास आने वाले रोगियों को मुफ्त में दवा दिया करते थे। वे बहुत दयालु और भले व्यक्ति थे। पारसी रुस्तमजी के द्वारा दिए गए दान के फलस्वरूप एक छोटा सा अस्पताल खोला गया जिसकी देखभाल का कार्य रुस्तमजी के जिम्मे था। महात्मा गाँधी ने सेवा करने के उद्देश्य से यह दायित्व प्रसन्नतापूर्वक अपने जिम्मे ले लिया था और यह सेवा कार्य करने के लिए अपनी वकालत के कार्य से इतना समय वे निकालते थे। इस संबंध में महात्मा गाँधी ने अपनी आत्मकथा में लिखा है - ''मेरी प्रबल इच्छा हुई की मैं इस अस्पताल में नर्स का काम करूँ। उसमें दवा देने के लिए एक से दो घंटे का कार्य रहता था। उसके लिए दवा बनाकर देने वाले किसी वेतन भोगी मनुष्य की अथवा स्वंयसेवक की आवश्यकता थी। मैंने यह काम अपने जिम्मे लेने और अपने समय में से इतना समय बचाने का निर्णय लिया।''१

वकालत में जो समय लगता था उससे कुछ समय निकालकर उस छोटे अस्पताल में सेवा कार्य किया करते थे। वे रोज सुबह अस्पताल जाते थे अस्पताल आने-जाने और वहाँ कार्य करने में उन्हें प्रतिदिन दो घंटे का समय लगता था। अस्पताल में गाँधीजी का कार्य बीमार की हालात समझकर उसे डॉक्टर को समझाना और डॉक्टर की लिखी दवा तैयार कर के बीमार को देने का था। यह कार्य करने से महात्मा गाँधी को हमेशा शांति और सकून मिलता था। इस प्रकार यह सेवा कार्य करते हुए महात्मा गाँधी दुःख-दर्द से पीड़ित हिन्दुस्तानियों के संपर्क में आए। गाँधीजी को इस कार्य का अनुभव उनके भविष्य के लिए बहुत उपयोगी सिद्ध हुआ। गाँधीजी के विचारानुसार ''यह अनुभव मेरे लिए भविष्य में बहुत उपयोगी सिद्ध हुआ। बोअर युद्ध के समय घायलों की सेवा सुश्रुषा के काम में और दूसरे बीमारों की परिचर्या में मुझे इससे बड़ी मदद मिली।''२

जिस प्रकार से महात्मा गाँधी ने बिना किसी संकोच व डर के कुष्ठ रोगी की सेवा व अस्पताल में मरीजों को दवा देने का सेवा कार्य किया उसी प्रकार दक्षिण अफ्रीका में रहने पर अपने बच्चों के जन्म व लालन-पालन का कार्य भी बखूबी दाई के रुप में किया।

दक्षिण अफ्रीका में महात्मा गाँधी को पुत्र हुए महात्मा गाँधी और कस्तुरबा ने मिलकर बच्चे को शास्त्रीय पद्धति से जन्म देने का निश्चय किया। डॉक्टर और नर्स की व्यवस्था की गई फिर भी एक अनजाना भय था कि यदि समय पर डॉक्टर और नर्स न मिल पाई और दाई भाग गई तब ऐसी स्थिती में क्या होगा? दक्षिण अफ्रीका में तालीम पाई हुई हिन्दुस्तानी दाई मिलना कठिन था ऐसे समय पर महात्मा गाँधी ने अनोखा निर्णय लिया उन्होंने ऐसी विकट परिस्थिति आने पर क्या करना चाहिए? इसके लिए जो मार्ग निकाला वह प्रशंसनीय है। बाल संगोपन का अध्ययन किया साथ ही डॉ. त्रिभुवनदास की 'माने शिखामण (माता की सीख) नामक पुस्तक भी पढ़ी जिसके प्रभाव स्वरूप अपने अंतिम दो बच्चों को उन्होंने स्वयं पाला व उन्हें नहलाने-धुलाने का कार्य भी किया।

अंतिम बच्चे के जन्म के समय गाँधीजी की कसौटी का समय आया। कस्तुरबा को प्रसव वेदना अचानक होने लगी। उस समय डॉक्टर घर में नही थे ऐसे समय प्रसव के समय जो भी दाई का कार्य करना होता है वह सारा कार्य महात्मा गाँधी ने स्वंय अपने हाथों से किया। यह सब कार्य 'माने शिखामण' पुस्तक पढ़ने के कारण आसान हो सका। इस संबंध में गाँधीजी अपने अनुभव को व्यक्त करते हुए लिखते है ''अंतिम शिशु के जन्म के समय मेरी पूरी-पूरी परिक्षा हो गई। पत्नी को प्रसव वेदना अचानक शुरू हुई। डॉक्टर घर प न थे, दाई को बुलवाना था। वह पास होती तो भी उससे प्रसव कराने का पर का काम न हो पाता। अतः प्रसव के समय सारा काम मुझे अपने हाथों ही करना पड़ा। सौभाग्य से मैंने इस विषय को 'माने शिखामण' पुस्तक में ध्यानपूर्वक पढ़ लिया था। इसलिए मुझे कोई घबराहट न हुई।।''३ इस प्रकार इतने बड़े वकील होने के बावजूद आम मरीजों की सेवा व अपनी पत्नी की प्रसव वेदना में एक नर्स या दाई का कार्य स्वयं महात्मा गाँधी ने किया। इससे सिद्ध होता है कि उनमें सेवा वृत्ति का गुण कूट-कूट कर भरा था।

दक्षिण अफ्रीका में भंगी को कुली कहते है उन लोगों के रहने की बस्ती को कुली लोकेशन कहते है। कुली लोकेशन में अशिक्षित, अज्ञान, हिन्दुस्तानियों व सफाई का कार्य करनेवाले विभाग की असावधानी के कारण गंदगी का साम्राज्य फैल रहा था। फलस्वरूप आरोग्य विभाग ने कुली लोकेशन को नष्ट करने का निर्णय लिया तथा वहाँ की धारा सभा से जमीन पर कब्जा करने की अनुमति प्राप्त की।

वहाँ रहने वाले अधिकांश मकान मालिकों ने मुझे वकील नियुक्त किया गाँधीजी ने उनसे कह दिया - ''अगर आप जीतेंगे तो म्यूनिसिपैलिटी की तरफ से जो भी खर्च मिलेगा उससे मैं संतोष कर लूँगा। आप हारे चाहे जीते, यदि हर पट्टे के पीछे दस पौंड आप मुझे देंगे तो काफी होगा।'' गाँधीजी ने उन्हें बताया कि ''जो रकम मुझे मिलेगी उसकी आधी रकम गरीबों के लिए अस्पताल बनाने या ऐसे ही किसी सार्वजनिक काम में खर्च किया जाएगा।''४ उनकी यह घोषणा सुनकर सभी कुली बहुत खुश हुए।

ऐसे समय पर वहाँ अचानक महामारी फैल गई यह महामारी बहुत ही प्राणघातक थी यह फेफड़ों में होने वाली महामारी थी। गाँवों में होने वाली महामारी की तुलना में यह अधिक भयंकर मानी जाती थी। इस महामारी की शुरुवात सोने की खान से हुई मुख्य रुप से हबशी लोग काम करते थे साथ ही कुछ हिन्दुस्तानी भी काम करते थें उनमें से २३ आदमियों को अचानक छूत लगी और वे भयंकर महामारी के शिकार बनकर लोकेशन में अपने घर रहने आये। वहाँ की स्थिति देखकर भाई मदनजीत ने महात्मा गाँधी को महामारी की सूचना देते हुए तुरंत आकर कुछ राहत कार्य करने के लिए कहा। मदनजीत ने एक खाली पडे हुए मकान का ताला तोड़कर उस पर कब्जा कर बीमारों को उसमें रखा।

महात्मा गाँधी सायकल द्वारा लोकेशन पहुँचे और वहाँ की वस्तु स्थिति का समाचार टाऊन क्लार्क को लिख भेजा। फलस्वरूप डॉ विलियम गॉडफ्रे समाचार मिलते ही दौड़े चले आये। वहाँ बीमारों के लिए डॉक्टर और नर्स काम करने लगे। इस प्रकार तीन व्यक्तियों द्वारा तेईस बीमारों को संभालना मुश्किल था लेकिन महात्मा गाँधी को यह पूर्ण विश्वास था कि भावना शुद्ध हो तो संकट का सामना करने के लिए सेवक व साधन मिल ही जाते है।

गाँधीजी के आफिस में चार हिन्दुस्तानी काम करते थे उन्होंने महात्मा गाँधी को सहयोग प्रदान किया। मरीजों की सेवा करने की वह भयंकर रात थी। गाँधीजी और उनके सहयोगी मरीजों की उचित सेवा - देखभाल कर रहे थे परंतु प्लेग जैसी महामारी के मरीजों की सेवा शुश्रुषा का अवसर इसके पहले महात्मा गॉधी को नही आया था। डॉ. गाडफ्रे की हिम्मत ने महात्मा गॉधी और उनके सहयोगी को निडर बना दिया था। वे लोग बीमारों की सेवा-देखभाल कर रहे थे। जैसे उन्हे दवा देना, ढाँढस बंधाना, पानी पिलाना और उनका मलमूत्र साफ करना आदि कार्य कर रहे थे।

महात्मा गाँधी के चारों सहयोगी नवजवान जी तोड मेहनत व निडरता के साथ महात्मा गाँधी के साथ मिलकर मरीजो की सेवा टहल कर रहे थे। उस रात किसी भी मरीज की मृत्यु नही हुई जिससे महात्मा गाँधी को अत्यधिक प्रसन्नता हुई। दूसरे दिन म्युनिसिपैलिटी के एक खाली गोदाम का कब्जा महात्मा गाँधी को दिया और बीमारों को वहाँ ले जाने की सूचना दी। महात्मा गाँधी ने कड़ी मेहनत करके उस गोदाम की साफ-सफाई की और वहाँ तत्काल एक काम चलाऊ अस्पताल का निर्माण किया गया।

बंबई में पहली बार जब प्लेग का महामारी फैली तो चारों ओर लोगों में घबराहट फैल रही थी। साथ ही राजकोट में भी प्लेग फैलने का डर था। महात्मा गाँधी ने आरोग्य विभाग में काम करने का विचार कर अपनी सेवा राज्य को अर्पण करने के लिए पत्र लिखा। राज्य में जो कमेटी बनाई उसमें महात्मा गॉधी की नियुक्ति की गई । महात्मा गाँधी ने पाखानों की सफाई पर जोर दिया। गली-गली जाकर पाखानो का निरीक्षण किया तथा उचित सुधार के उपाय बतलाए।

कमेटी के एक सदस्य के साथ महात्मा गाँधी भंगियों की बस्ती में पाखानों का निरीक्षण करने के लिए गए। भंगियों की बस्ती देखकर सानंद आश्चर्य हुआ क्योंकि उनके घर और आँगन साफ-सुथरे थे। घर के अंर लिपा-पुता देखा। आँगन झाडा बुहारा था जो गिने चुने बरतन थे वे साफ व चमचमा रहे थे। इस बस्ती में अत्यधिक साफ-सफाई होने के कारण यहाँ प्लेग की बीमारी फैलने का कोई लक्षण व डर नही दिखाई दिया।

अपनी बंबई यात्रा के दौरान महात्मा गाँधी अपने बहनोई से मिलने गए उनके बहनोई बीमार थे। अतः महात्मा गाँधी अपने बहन बहनोई को अपने साथ राजकोट ले गए। बीमारी अत्यधिक गंभीर हो गई महात्मा गाँधी ने उन्हें अपने कमरे में रखा। दिनभर महात्मा गाँधी उनकी सेवा करते और रात में भी जागकर उनकी देखभाल करते थे। अपने बहनोई की सेवा करते हुए महात्मा गाँधी अपना दक्षिण अफ्रीका का कार्य भी करते थे। उनके बहनोई की मृत्यु हो गई लेकिन उनकी बीमारी में जो सेवा कार्य किया उससे उनको आत्मिक शांति व संतोष प्राप्त हुआ।

महात्मा गाँधी में सेवा भावना कूट-कूटकर भरी थी। बीमार कोई भी हो, अपने हो या पराए उनकी सेवा करना महात्मा गाँधी अपना परम कर्तव्य समझते थे और निस्वार्थ समर्पित भाव से सेवा किया करते थे। महात्मा गाँधी के सेवा सुश्रुषा के इस शौक ने आगे चलकर विशाल रुप धारण कर लिया। सेवा के गुण जब आनंददायक होते है तभी टिक सकते है। जिस सेवा कार्य से आनंद नही आता वह न सेवा करने वाले को फलती है और न सेवा करवाने वाले को अच्छी लगती है। जिस सेवा कार्य में आनंद आता है मन को संतोष व शांति प्राप्त होती है उस सेवा की तुलना में ऐश-आराम या धनोपार्जन आदि कार्य तुच्छ व फीके प्रतीत होते है।

महात्मा गाँधी के किस्मत में घर बसाकर किसी एक स्थान पर स्थिर होकर रहना नही था। जोहानिसबर्ग में जब वे स्थिर होने लगे तब उनके साथ एक अनसोची घटना घटी। अखबारों में महात्मा गाँधी ने पढ़ा कि नाताल में जूलू विद्रोह हुआ है। गाँधीजी की जुलू लोगों से कोई दुश्मनी नही थी। महात्मा गाँधी का मानन था कि अंग्रेजी सल्तनत संसार का कल्याण करने वाली सल्तनत है।

महात्मा गॉधी अपने को नातालवासी मानते थे इसके कारण उन्होंने गर्वनर को पत्र लिखा कि अगर जरुरत हो तो घायलों की सेवा करने वाले हिन्दुस्तानियों की एक टुकड़ी लेकर मैं सेवा के लिए जाने को तैयार हूँ। तुरंत ही गवर्नर का स्वीकृति सूचक पत्र मिला। अतः घायलों की सेवा करने के लिए डरबन पहुँचकर महात्मा गाँधी ने चौबीस आदमियों की एक टुकड़ी तैयार की इस तुकड़ी ने घायलों की छह सप्ताह तक सतत सेवा की।

केंद्र पर पहुँचने के बाद जब महात्मा गाँधी के हिस्से मुख्यतः जूलू घायलों की शुश्रुषा करने का ही काम आया तो गाँधीजी बड़े खुश हुए। वहाँ के डॉक्टर अधिकारी ने उनका स्वगात किया। उसने गाँधीजी से कहा ''गोरों में से कोई इन घायलों की सेवा शुश्रुषा करने के लिए तैयार नहीं होता। मैं अकेला किस किस की सेवा करूँ? इन के घाव सड़ रहे हैं। अब आप आए हैं, इसे मैं इन निर्दोषी लोगों पर ईश्वर की कृपा ही समझता हूँ।'' बीमार जुलू लोग गाँधीजी व उनके सहयोगियों को देखकर खुश हो गए। गोरे सिपाही हमें जख्म साफ करने से रोकते। उनके न मानने पर के जूलूओं के बारे में गंदे शब्दों का उपयोग करते थे।

जिन बीमारों की सेवा - सुश्रुषा का काम महात्मा गाँधी व उनके सहयोगियों को सौंपा गया था वे लड़ाई में घायल नहीं हुए थे बल्कि उनमें एक हिस्सा उन कैदियों का था जिन्हें शक में पकड़ा गया था। जनरल ने उन्हें कोडे लगाने की सजा दी थी जिसके फलस्वरूप उनके शरीर में घाव हो गए थे उन घावों की उचित देखभाल न हो सकने के कारण वे पक गए थे। दूसरा भाग उन लोगों का माना जाता था जो जुलूओं के मित्र माने जाते थे। इन मित्रों को सिपाहियों ने भूलवश घायल कर दिया था जबकि इन्होंने मित्रता सूचक चिन्ह धारण कर रखा था। सभी घायलों - बीमारों की सेवा महात्मा गाँधी और उनके सहयोगी के बिना किसी भेदभाव के निस्वार्थ व समर्पित भाव से की। इस प्रकार महात्मा गाँधी सभी स्थानों पर जरुरत पड़ने पर सेवा कार्य करने के लिए हर समय तत्पर रहते थे और पूरी लगन से जी जान लगाकर, हर नरल, धर्म के लोगों की बिना किसी भेदभाव के सेवा शुश्रुषा किया करते थे।

निष्कर्षता : हम यह कह सकते है कि महात्मा गाँधी के लिए मानव सेवा करना प्रमुख धर्म था रोगी चाहे किसी भी जाति, नसल का हो वे किसी में भेदभाव नही करते बल्कि सबकी समान भाव से सेवा किया करते थे चाहे कुष्ठ रोगी हो, महामारी से ग्रसित रोगी हो, क्षय रोगी हो या अपने स्वयं की पत्नी कस्तुरबा का प्रसव प्रसंग हो उन्होंने निडरतापूर्वक व प्रसन्नतापूर्वक सब लोगों की सेवा की। चाहे रोगी अपने परिवार, अपने देश, अपने धर्म या दूसरे धर्म व विदेश का क्यों न हो वे सबकी निस्वार्थ सेवा के लिए हमेशा तत्पर रहते थे। जैसे ही कही पर भी महामारी फैलने की खबर मिलती चाहे व बंबई हो या दक्षिण अफ्रीका हो वे वहाँ पहुँचकर उन मरीजों की जी जान से सेवा सुश्रषा किया करते थे।

महात्मा गाँधी का जीवन विषयक दृष्टिकोण मानवतावादी था। दुःखी व रोगी को देखकर उनका हृदय द्रवित हो उठता था और वे उनकी निस्वार्थ सेवा किया करते थे उन्होंने सेवाव्रत करने का निश्चय लिया। देश या विदेश में जहाँ भी वे रहते थे वहाँ के रोगियों की सेवा समर्पित भाव से करते थे वे दया, करूणा, मानवता की अद्‌भूत मिशाल थे।

संदर्भ ग्रंथ :-

१. श्री बलभ्रद प्रसाद गुप्ता - रसिक तथागत - पृष्ठ - २०

२. महात्मा गाँधी - मेरे अनुभव - पृष्ठ - १५६

३. महात्मा गाँधी - मेरे अनुभव - पृष्ठ - १५७

४. महात्मा गाँधी - मेरे अनुभव - पृष्ठ - २७

५. महात्मा गाँधी - मेरे अनुभव - पृष्ठ - २३९

❑❑❑

❑❑❑